ISSN:2583-8849



शकुंतला अग्रवाल 'शकुन'
भीलवाड़ा, राजस्थान

थाम तिरंगा बढ़ चले,लेकर स्वप्न हजार।
छोटे-छोटे पाँव से,नाप रहे संसार।
नाप रहे संसार,इन्हें मत कोई रोको।
यही देश की शान,इन्हें मत कोई टोको।
इनको बच्चा मान,कभी मत लेना पंगा।
यह भारत की जान,चले हैं थाम तिरंगा।

छाया मिलती पेड़ से,संग मिलें फल-फूल।
शुद्ध हवा देते हमें,यह जीवन का मूल।
यह जीवन का मूल,इन्हें मत काटो कोई।
जिसने काटे पेड़,उसी की किस्मत सोई।
खुद को कर बर्बाद,एक दिन वह पछताया।
जिसने रोपा पेड़,उसी को मिलती छाया।

चंदा देता चाँदनी,सबको एक समान।
सूरज देता रोशनी, करता नहीं गुमान।
करता नहीं गुमान,पुष्प खुशबू देकर भी।
मुस्काते हैं खूब,जिन्दगी लघु लेकर भी।
रौंदी जाती दूब,नहीं करती मन गन्दा।
रत्नाकर में डूब,सभी को मोहे चंदा।

दादू चलते हैं चलो,अपने प्यारे गाँव।
खेत लुभाते संग में,वट-पीपल की छाँव।
वट-पीपल की छाँव, वायु नित निर्मल बहती।
मिलता है आनन्द,देख हरियाली धरती।
गाँवों का यह सत्य,नहीं है कोई जादू।
पोते का मन जान,बहुत खुश होते दादू।

चुन्नू मम्मी से कहे,ला दो रंग-गुलाल।
होली खेलेंगे सभी,होगा खूब धमाल।
होगा खूब धमाल, जश्न फिर खूब मनेगा।
होकर लल्लम लाल,खुशी का चंग बजेगा।
सुन रंगों की बात,नाचता खुश हो मुन्नू।
गुझिया लाना संग,कहे मम्मी से चुन्नू।

दादू दिलवा दो मुझे,नीली एक पतंग।
नापेगी जब वह गगन,सब रह जाएँ दंग।
सब रह जाएँ दंग,मलेंगे अपनी आँखें।
खूब जमेगा रंग,उड़ेगी खोले पाँखें।
श्रम से मिलती जीत,नहीं यह कोई जादू।
पकड़ डोर की छोर,उड़ूँ मैं नभ में दादू।

आओ बच्चों हम सभी,पेड़ लगाएँ एक।
हम सब मिलकर आज ही,काम करें यह नेक।
काम करें यह नेक,तभी वसुधा महकेगी।
पर्यावरण विशुद्ध,वाटिका भी चहकेगी।
जीवन का आधार,पेड़ हैं इन्हें बचाओ।
कटे न कोई पेड़,करें प्रण हम सब आओ।

एक जुलाई आ गई,हो जाओ तैयार।
बहुत मना ली मौज भी,नाप लिया संसार।
नाप लिया संसार,बहुत करली मनमानी।
पढ़ता-लिखता नित्य,उसी का जीवन धानी।
चमके ज्यों आदित्य,करे जो खूब पढ़ाई।
छोड़ो बाकी कृत्य,आ गई एक जुलाई।